िठभ मंस्रिड केंग मंसूं र

गेंव देक्न्बी, र्डळप्पच र्डेटंड, उठमील र्याबी,

হির্ল কুণ্ণ, চি.খু. নাগ্রতথ



पञ्जीयन सं. – 9/2025 हिम संस्कृति शोध संस्थान

गांव देहुरी, डाकघर डोहाड, तहसील आनी, जिला कुल्लू, हि.प्र. 172026

Email. - info@himsanskritishodhsansthan.org web. - https://himsanskritishodhsansthan.org/

क्रमाङ्क – हि.सं.शो.सं./प्रे.वि./01

दिनाङ्क – 05/10/2025

प्रेस विज्ञप्ति – 01

विषय: एँ छवी भें ३,४४ ४४ मंवक्र॰ एवं मंबर्रेष हें इंदिमेश्न ५५० — दमहर्व उद्भव, कुछु। [टांकरी मातृका के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु विशेष पहल — दशहरा उत्सव, कुल्लू।]

চিभ मंम्रीं में ए मंम्र्वं र एवं मूरी ध्रीहरूल एभ पविर्वंच को मंयुकु पूर्णम में उम व्राह्म के रमरूचे उद्भेव, कुछ भें टेंकवी भें अर्क के मंचक्क येंच मंवर्र के उद्देश में एक याज़री पठल को हें चठी है। उम याजिएंच के यांचर्र येंच मर्चेह के मंची रेवर्जों के याच्रींची मितिचें भें टेंकवी लिपि भें वैदेच उर्णच कव लगांच हें चठे हैं। उम पूर्णम के उद्देश कि मंग्रींच मेंच को पूंचींच टेंकवी लिपि के पुर्श्रीवित्र कवर्ष योंच वृद्ध प्रीत्मी भें उमकी पठ्यांच योंच भठकूं के ममक्त वर्ष है। किम मंग्रींच मेंच मंग्रींच के मंग्रींच के मंग्रींच विद्या के मंग्रींच के प्रार्थ कि टेंकवी लिपि किमेंचल के मंग्रींच पठ्यांच की यांच्रों है। उम मंग्रींच के प्रार्थ हैं। येंच म्रींच कवर्ष लेंक मंग्रींच के मंग्रींच के पंचक्च की दिम्म भें भठकूं पर के मंग्रींच के प्रार्थ है। मृरी ध्रीहरूल एमि के मंग्रींच विद्या यांच्रींच के कार्य विद्या यांच्रींच के प्रार्थ यांच्रींच के प्रार्थ यांच्रींच विद्या यांच्रींच के प्रार्थ के प्रार्थ के प्रार्थ के प्रार्थ के कि प्रार्थ यांच्रींच के विद्या यांच्रींच के यांच्रींच के प्रार्थ के मंग्रींच के प्रार्थ के प्रार्थ के प्रार्थ के कि यांच्रींच के प्रार्थ के प्रार्थ के मंग्रींच कि मंग्रींच के संग्रींच के प्रार्थ के कि येंच प्रार्थ के प्रार्थ के अप प्रार्थ के प्रार्थ के अप प्रार्थ के मंग्रींच के अप प्रार्थ के अ

हिम संस्कृति शोध संस्थान एवं श्री खुडीजहळ धाम परिवार के संयुक्त प्रयास से इस वर्ष के दशहरा उत्सव, कुल्लू में टांकरी मातृका के संरक्षण और संवर्धन के उद्देश्य से एक अनूठी पहल की जा रही हैं। इस अभियान के अंतर्गत बाह्य सराज क्षेत्र के सभी देवताओं के अस्थायी शिविरों में टांकरी लिपि में बैनर तैयार कर लगाए जा रहे हैं। इस प्रयास का उद्देश्य हिमाचल प्रदेश की प्राचीन टांकरी लिपि को पुनर्जीवित करना और नई पीढ़ी में इसकी पहचान और महत्व को सशक्त बनाना है। हिम संस्कृति शोध संस्थान के संस्थापक डॉ. यज्ञदत्त शर्मा ने बताया कि टांकरी लिपि हिमाचल के सांस्कृतिक पहचान की आत्मा है। इसे सार्वजनिक आयोजनों में पुनः स्थापित करना लोक संस्कृति के संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। श्री खुडीजहल धाम के संयोजक विजय दत्त ने कहा कि कुल्लू दशहरा देव संस्कृति का वैश्विक पर्व है, और इस पवित्र अवसर पर टांकरी लिपि के प्रचार-प्रसार से हिमाचली अस्मिता को नया सम्मान मिलेगा। संस्थान और धाम परिवार का उद्देश्य है कि आने वाले समय में यह अभियान पूरे हिमाचल प्रदेश में विस्तारित किया जाए तािक टांकरी लिपि को विद्यालयों, लोक उत्सवों और धार्मिक स्थलों में पुनः प्रतिष्ठा प्राप्त हो सके। सभी श्रद्धालुओं, देव संस्थानों, कलाकारों एवं स्थानीय समुदायों से आग्रह किया गया है कि वे टांकरी मातृका के संरक्षण एवं संवर्धन के इस पवित्र अभियान में सक्रिय भागीदारी निभाएँ।

ान्यतार

(सुनिता कुमारी)

सचिव

प्रतिलिपि सम्प्रेषित – सूचना पष्ट/वाट्सप फेसबुका सम्बन्धित पञ्जिका। सभी प्रेस वालों को - वाट्सप फेसबुका